

डॉ. नॉट हेम, नीतिवचन, व्याख्यान 17, नीतिवचन 30:1-9 अगस्त

© 2024 नॉट हेम और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. नॉट हेम और नीतिवचन की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र संख्या 17, नीतिवचन अध्याय 30, श्लोक 1 से 9, अगोर का परिचय है।

नीतिवचन की बाइबिल पुस्तक पर पाठ 17 में आपका स्वागत है।

यहां अब हम नीतिवचन की पुस्तक के अध्याय 30 को देखने जा रहे हैं। यह अंतिम अध्याय है। और हममें से अधिकांश लोगों के लिए, यहां तक कि जब मैं आज यहां यह व्याख्यान दे रहा हूं, तो इस शानदार, अद्भुत और रोमांचक पुस्तक के सभी अध्याय कई अलग-अलग तरीकों से सबसे रहस्यमय हैं।

यह अध्याय इतना रहस्यमय क्यों है, इसका कारण यह है कि, सबसे पहले, प्रारंभिक कविता में, हमारा सामना एक नए चरित्र से होता है जिसने लिखा है, कम से कम यही वह है जो हमें यहां श्लोक 1 में बताया गया है, जिसने इसकी संपूर्णता लिखी है अध्याय, लेकिन जैसा कि हमें इसके बारे में बताया गया है, जब हम पढ़ते हैं तो हम बहुत जल्दी पहचान जाते हैं कि पहले नौ छंद एक तरह से एक सुसंगत खंड हैं, जबकि छंद 10 से 31 श्रेणियों के कई बहुत ही दिलचस्प समूहों से बने हैं। जीवन के विभिन्न पहलुओं के बारे में कथन जो काफी असंगत लगते हैं। मैं कोशिश करूंगा और देखूंगा कि क्या हम वहां कुछ सुसंगतता पा सकते हैं, लेकिन जैसा कि मैं इस व्याख्यान में ऐसा कर रहा हूं, मेरे दिमाग के पीछे एक छोटा सा विचार है जो मुझे आश्चर्यचकित करता है कि क्या मैं सिर्फ एक आंतरिक सुसंगतता थोपने की कोशिश कर रहा हूं। विशिष्ट पश्चिमी दार्शनिक मानसिकता के कारण अलग-अलग हिस्से, बेशक, एक यूरोपीय के रूप में, जो संरचना और सुसंगतता लागू करना पसंद करता है, भले ही कोई न हो। तो आइए देखें कि हम कहाँ पहुँचते हैं, लेकिन मैं सबसे पहले, आपको इस अध्याय के पहले दो श्लोक पढ़ना चाहता हूँ, और मैं इसे पहले नए संशोधित मानक संस्करण से पढ़ूँगा, फिर मैं इसे न्यू इंटरनेशनल से पढ़ूँगा। संस्करण, और फिर मैं नए संशोधित मानक संस्करण पर वापस जाऊँगा, जिसे मैं व्यक्तिगत रूप से पसंद करता हूँ।

लेकिन एक कारण है कि मैं इन दोनों को क्यों पढ़ता हूँ, और मैं इसे एक क्षण में समझाऊँगा। तो अब हम शुरू करें। शीर्षक स्वयं जेकेल के पुत्र, भविष्यवक्ता अगुर के शब्द हैं।

और फिर दैवज्ञ शुरू होता है। मनुष्य यों कहता है, हे परमेश्वर, मैं थक गया हूँ, हे परमेश्वर, मैं थक गया हूँ, मैं कैसे प्रबल हो सकता हूँ? बस एक पल के लिए उसे रोक कर रखें। अब मैं न्यू इंटरनेशनल वर्जन से पढ़ने जा रहा हूँ।

जेकेल के पुत्र अगूर की बातें, एक प्रेरित कथन। एथिल को इस आदमी का कथन। क्या आप दोनों के बीच अंतर देखते हैं? आइए मैं आपको एनआरएसवी से दोबारा पढ़कर सुनाता हूँ।

के पुत्र अगूर के वचन, जो एक दैवज्ञ है। दैवज्ञ के लिए एनआरवी में यह प्रेरणाहीन कथन कहता है। यह कमोबेश उसी तरह की चीज़ का पुनर्लेखन है, जैसा कि हम एक क्षण में देखेंगे।

लेकिन फिर अगला वाक्यांश बिल्कुल अलग है। मनुष्य यों कहता है, हे परमेश्वर, मैं थक गया हूँ, हे परमेश्वर, मैं थक गया हूँ, मैं कैसे प्रबल हो सकता हूँ? जबकि एनआरवी में यह कहा गया है कि इस व्यक्ति ने एथिल को क्या कहा था। और फिर यह वाक्यांश भी, हे भगवान, मैं थक गया हूँ, लेकिन मैं प्रबल हो सकता हूँ।

यहां क्या हो रहा है? यदि हम मानते हैं कि धर्मग्रंथ ईश्वर से प्रेरित है, और यदि हम सुधार के महान नारों में से एक, क्लैरिटास स्क्रिप्टुराई, धर्मग्रंथ की स्पष्टता का पालन करते हैं, तो हमारे पास मौजूद दो सबसे अच्छे आधुनिक अंग्रेजी अनुवाद इतने अलग कैसे हैं? निःसंदेह, यह उन तर्कों में से एक है जो अक्सर मुस्लिम विश्वासियों द्वारा उठाए जाते हैं, जिनकी कुरान कई मायनों में बहुत अधिक सीधी है, जहां हमारे साथ अक्सर जुड़ी समस्याएं नहीं होती हैं। बेशक, इस्लाम की कुरान आध्यात्मिकता में, कुरान का अनुवाद नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि हमेशा मूल रूप में पढ़ा जाना चाहिए। अब, एनआरवी और एनआरएसवी का मूल एक ही है, लेकिन व्याख्या अलग है।

और एक बार जब हमारे पास इसका अनुवाद हो जाता है, तो ऐसा लगता है कि हमारे पास एक ही चीज़ के दो अलग-अलग संस्करण हैं। नहीं, हमारे पास दो अलग-अलग संस्करण नहीं हैं। हमारे पास एक ही संस्करण के दो अलग-अलग अनुवाद हैं।

लेकिन फिर ऐसा कैसे होता है? खैर, यही एक कारण है कि मैंने पहले कहा था कि यह नीतिवचन की पुस्तक के सबसे रहस्यमय, सबसे असामान्य हिस्सों में से एक है। और यह वास्तव में हिब्रू पाठ में जो कहा गया है उसकी जटिलता और अनिश्चितता पर निर्भर करता है। अब, इस व्याख्यान में, मैं हिब्रू के सभी विवरणों में नहीं जा सकता, और यदि मैंने ऐसा किया, तो यह संभवतः बहुत थकाऊ और बहुत ही विस्तृत होगा।

लेकिन बस यह कहना है कि हिब्रू में शब्द बेहद असामान्य हैं, वे बहुत दुर्लभ हैं, और व्याकरणिक और वाक्यात्मक निर्माण भी, विशेष रूप से कविता एक में पहली पंक्ति का, जिसका या तो अनुवाद किया गया है, इस व्यक्ति का एटीएल को कहा गया है, या इस प्रकार कहा गया है हे भगवान, मैं थक गया हूँ। एनआरएसवी में गॉड बिट एनआरवी में एटीएल के आईईएल को दर्शाता है। और हम वास्तव में नहीं जानते कि एटीएल क्या है।

एनआरवी सुझाव दे रहा है कि एटीएल वास्तव में एक व्यक्ति का व्यक्तिगत नाम है जो अन्यथा धर्मग्रंथों या अन्यत्र अप्रमाणित है। यह भी एक असामान्य नाम है। जबकि एनआरएसवी का मानना है कि यह एक यौगिक संज्ञा हो सकती है, या यूँ कहें कि दो अलग-अलग संज्ञाएं हो सकती हैं जो एक साथ करीब हैं और एक साथ लिखी गई थीं, लेकिन उन्हें अलग-अलग पढ़ा जाना चाहिए।

और इसलिए, वे एटीएल, एट और एले को अलग करते हैं, और ए कुछ थकावट, मेरी थकावट जैसा है, और एले भगवान है। इसलिए, हमारे पास एक अलग अनुवाद है। अब, यह कैसे होता है? खैर, हम वास्तव में नहीं जानते क्योंकि हम वहां नहीं थे।

लेकिन अब मैं जकी के बेटे आगुर की पहचान के बारे में कुछ कहना चाहता हूं। और फिर, हम वास्तव में नहीं जानते कि यह व्यक्ति कौन है। मेसोपोटामिया और इज़राइल के बाहर अन्य जगहों पर हमारे समान नाम हैं।

और इसलिए, कुछ लोगों का सुझाव है कि अगुर वास्तव में एक विदेशी था। जातीय रूप से कहें तो, एक गैर-इज़राइली। हालाँकि, जैसा कि हम एक क्षण में देखेंगे, उनका धर्मशास्त्र पूरी तरह से इज़राइली है।

तो, क्या वह एक इस्राएली था जिसका नाम बहुत ही असामान्य था, जिसमें उसके पिता का नाम भी असामान्य था? या क्या वह एक विदेशी था जो संभवतः प्राचीन इज़राइल के विश्वास में परिवर्तित हो गया था? और यदि दूसरा विकल्प सत्य है, और निश्चित रूप से, हम संभवतः नहीं जान सकते हैं, लेकिन मैं दूसरे विकल्प की ओर रुझान रखता हूं, हालांकि यह, निश्चित रूप से, सूचित अनुमान से अधिक नहीं है। लेकिन अगर वह एक विदेशी था जो इज़राइल के भगवान में विश्वास करने लगा था और अब एक नए विश्वास के साथ एक विदेशी के रूप में अपने जीवन के अनुभव पर आंशिक रूप से, अच्छी तरह से, स्पष्ट रूप से आंशिक रूप से दार्शनिक, अर्ध-दार्शनिक प्रतिबिंब का योगदान दे रहा है, तो यह हो सकता है संभवतः समझाएं कि अनुभागों के शुरुआती शब्द और अध्याय के कुछ बाद के शब्द इतने कठिन और असामान्य क्यों हैं। वास्तव में ऐसा हो सकता है कि भाषा की कुछ असामान्यता यह हो कि हिब्रू उसकी दूसरी भाषा है, न कि उसकी मूल भाषा।

यह अगुर अपने प्रतिबिंब में यहां जो कुछ साझा कर रहा है उसकी असामान्यता की कुछ विशिष्टताओं को समझा सकता है। जो भी हो, अगला सवाल यह उठता है कि यहां, सौभाग्य से, एनआरएसवी और एनआईवी कमोबेश सहमत हैं। एनआरएसवी का कहना है कि जिन शब्दों को हम पढ़ने और उनके बारे में बात करने जा रहे हैं, वे एक दैवज्ञ हैं, जबकि एनआईवी का कहना है कि वे एक प्रेरित कथन हैं।

अब, जब इज़राइल के पैगम्बरों के उपदेशों या संक्षिप्त काव्यात्मक चिंतन का संदर्भ दिया जाता है तो दैवज्ञों का अक्सर उल्लेख किया जाता है। इसलिए, यशायाह के कुछ कथनों को, उदाहरण के लिए, यशायाह की पुस्तक में, मासाह कहा जाता है, जिसे आमतौर पर दैवज्ञ के रूप में अनुवादित किया जाता है, जैसा कि यहां एनआरएसवी में है। और प्रारंभिक पंक्ति जो कहती है, जाके के पुत्र अगुर के शब्द, एक दैवज्ञ, फिर मासाह, शब्द मासाह, फिर अगुर के शब्दों को एक निश्चित प्रकार के उच्चारण या संचार के रूप में समझाएगा, अर्थात्, जैसा कि एनआईवी बनाता है यह अधिक स्पष्ट है, एक भविष्यवक्ता के समान एक प्रेरित कथन।

हालाँकि, एनआईवी सीधे तौर पर दैवज्ञ के बजाय प्रेरित कथन क्यों कहता है, इसका कारण यह है कि आम तौर पर जब हमारे पास भविष्यवक्ताओं में दैवज्ञ होते हैं, तो वे दैवज्ञ बड़े पैमाने पर,

विशेष रूप से नहीं, बल्कि बड़े पैमाने पर, सीधे भाषण में भगवान के शब्दों को रिकॉर्ड करते हैं। जबकि आगुर के बाद के प्रतिबिंब में, केवल बहुत कम, यदि कुछ भी हो, को भगवान के शब्द होने के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। और जब हम श्लोक 4 को देखेंगे तो हम एक मिनट में उस पर आ जाएंगे। लेकिन अभी, इसका कारण यह है कि शायद एनआईवी के पास यह समझाने का एक अच्छा तरीका है कि क्या हो रहा है क्योंकि हमारे पास 2 सैमुअल 23 में एक उदाहरण है जहां डेविड ने अपने उनकी मृत्यु से कुछ समय पहले के अंतिम शब्द, उनके जीवन की यात्रा और ग्रंथ सूची पर उनके स्वयं के प्रतिबिंबों के बारे में बात करते हैं जिसमें वह खुद को एक आदमी, आदमी के रूप में वर्णित करते हैं, इसी तरह की अभिव्यक्ति में, और फिर कहते हैं कि वह अब एक मसाह, एक दैवज्ञ देने वाले हैं, शायद अगुर के समान।

और फिर हमारे पास जो कुछ है वह वास्तव में भगवान और भगवान के आशीर्वाद के तहत अपने जीवन की यात्रा पर डेविड का आभारी प्रतिबिंब है। और ऐसा प्रतीत होता है कि इस उदाहरण में और डेविड के उदाहरण में, दैवज्ञ एक प्रेरित कथन को इस अर्थ में संदर्भित करता है कि इसका संबंध ईश्वर से है। यह एक धार्मिक चिंतन है।

लेकिन ऐसा नहीं है, हालांकि यह प्रेरित होने का दावा करता है, लेकिन इसमें पूरी तरह या यहां तक कि बड़े पैमाने पर दिव्य भाषण शामिल होना जरूरी नहीं है। यह सब कहने के बाद, इसे और भी जटिल बनाने के लिए, वास्तव में इज़राइल के बाहर एक जगह का नाम है जिसे मासाह कहा जाता है। और हमने पहले ही उल्लेख किया है कि अगुर और जेक दोनों नाम विदेशी नामों के रूप में दर्ज हैं।

तो, यह निश्चित रूप से मामला भी हो सकता है, और कुछ अंग्रेजी अनुवाद और अन्य अनुवाद इसे प्रतिबिंबित करते हैं, कि वास्तव में यह प्रारंभिक परिचय कहता है, मासा के क्षेत्र से, जेक के पुत्र, अगुर के शब्द। क्या आप देख सकते हैं कि यह सब कितना जटिल है? अब, क्या यह कोई समस्या है? खैर, यह मेरे जैसे लोगों के लिए एक समस्या है क्योंकि हमें यह पता लगाने की कोशिश करनी होगी कि इन सबका मतलब क्या है। अंततः, मुझे लगता है कि इसका वास्तविक अर्थ क्या है, इसका पूर्ण सत्य खोजने का प्रयास करने से न तो बहुत कुछ हासिल होता है और न ही कुछ खोता है।

क्योंकि वास्तव में जो मायने रखता है वह यह है कि स्पष्ट रूप से निम्नलिखित को धर्मग्रंथ के हिस्से के रूप में शामिल किया गया है और इसलिए यह एक प्रेरित कथन है। और चाहे यह मासा के किसी व्यक्ति द्वारा किया गया हो या चाहे हमें बताया गया हो कि यह वास्तव में एक प्रेरित कथन है, इससे वास्तव में महत्व और प्रासंगिकता और निम्नलिखित छंदों में जो दर्ज किया जा रहा है उसकी सत्यता दोनों में कोई बदलाव नहीं आता है। यह सब कहने के बाद, यह उद्घाटन जो इतना जटिल और समझने में कठिन है, ने इस तथ्य में बहुत अच्छा योगदान दिया है कि यह अध्याय संभवतः नीतिवचन की बाइबिल पुस्तक में सबसे अधिक उपेक्षित या समझे गए अध्यायों में से एक है।

और भी कारण हैं जिनके बारे में हम एक मिनट में पता लगा लेंगे, लेकिन यह उनमें से एक है। इसलिए, इस दौड़ के अस्पष्ट उद्घाटन के माध्यम से थोड़ा सा रास्ता साफ करने के बाद, मैं धीरे

और अस्थायी रूप से सुझाव देना चाहता हूँ कि हमारे पास संभवतः यहां एक मूल रूप से गैर-इजरायल व्यक्ति का बाइबिल में योगदान है जो विश्वास में आया है। इसराइल के ईश्वर में और अब संभवतः अपने जीवन के अंत के करीब, डेविड के समान, अपनी ग्रंथ सूची पर, अपनी यात्रा पर विचार कर रहा है। वह ऐसा बहुत, बहुत संक्षेप में, यहाँ तक कि डेविड से भी अधिक संक्षेप में कर रहा है।

और डेविड के लिए, निस्संदेह, हमारे पास 1 और 2 सैमुअल्स में एक पूरी लंबी ग्रंथ सूची है। अर्गो से, हमारे पास बस ये कुछ छंद हैं। अब हम श्लोक 1 के शेष भाग और श्लोक 2 और 3 की ओर बढ़ते हैं, क्योंकि अब, अर्गो हमें यह जानकारी दे रहा है कि वह अपने बारे में क्या सोचता है।

यह लगभग एक डायरी प्रविष्टि की तरह है। यह बहुत ईमानदार है। यह बहुत आत्म-आलोचनात्मक है और लगभग आत्म-घृणा की हद तक है।

आश्चर्यजनक रूप से कड़े बयान दिए जा रहे हैं, जो अपनी शर्तों पर काफी सख्त और अतिवादी और शायद अस्वस्थ भी लगते हैं। कुछ मिनटों के समय में मैं जो सुझाव दूंगा, एक बार जब हम देख लेंगे कि वह वास्तव में यहां क्या कह रहा है, तो हम कोशिश करेंगे और जो कुछ वह यहां कह रहा है उसे शुरुआती नौ छंदों के बड़े ढांचे में डाल देंगे, क्योंकि यह केवल पृष्ठभूमि के खिलाफ है श्लोक 4 से 9 तक मुझे लगता है कि हम यह समझना शुरू कर पाएंगे कि अर्गो यहां अपने बारे में ऐसे आत्म-नकारात्मक तरीकों से क्यों बात करता है। इसका एक अलंकारिक कारण है, जिसे मैं एक मिनट में खोलूंगा।

ये रहा। अर्गो अपने बारे में यही कहता है। मैंने नये संशोधित मानक संस्करण से पढ़ा।

पहिले तो वह कहता है, हे परमेश्वर, मैं थक गया हूँ, मैं कैसे प्रबल हो सकता हूँ? यह, सबसे पहले, भगवान के लिए एक आवेदन है। यह प्रार्थना के संदर्भ में व्यक्त किया गया है। हे भगवान, मैं थक गया हूँ, मैं कैसे प्रबल हो सकता हूँ? यह सवाल, मैं कैसे जीत सकता हूँ, उसके जीवन के अंत में, जब वह इतना बूढ़ा और कमजोर हो जाता है कि उसे लगता है कि उसका जीवन समाप्त हो रहा है, कहा जा सकता है।

प्रश्न, मैं कैसे जीत सकता हूँ, वास्तव में एक प्रश्न यह है कि मुझे और कितने समय तक जीवित रहना है? यदि वह अपने जीवन के अंत में नहीं है, और फिर, यह केवल एक सूचित अनुमान है क्योंकि हम डेविड के समान कथन के समानांतर, डेविड के जीवन के अंत में हैं, तो यदि वह युवा और अधिक फिट है और लंबे समय तक जीने की उम्मीद करता है, तो यह इस तथ्य के बारे में अधिक है कि वह किसी प्रकार के संकट के कारण थक गया है, और अब वह भगवान से पूछ रहा है, मैं उन चुनौतियों से कैसे निपट सकता हूँ जिनका मैं सामना कर रहा हूँ? और फिर, हम वास्तव में नहीं जान सकते कि स्थिति क्या है। मैं सुझाव दूंगा, जबकि कई कारण जो मैंने पहले ही बताए हैं, वे इस तथ्य की ओर इशारा करते हैं कि वह अपने जीवन के अंत में बात कर रहे हैं, और यह वास्तव में ऐसा ही पढ़ता है, फिर भी, जैसा कि हम एक क्षण में देखेंगे, यह ऐसा प्रतीत होता है कि एगुर ईश्वर से इस तरह से मदद करने के लिए कह रहा है जिससे पता चलता है कि वह, एगुर, मरने से पहले कई और वर्षों के जीवन की उम्मीद कर रहा है। तो फिर, हम पाठ द्वारा अलग-

अलग दिशाओं में बंटे हुए हैं, हमें अलग-अलग दिशाओं में निर्देशित किया जाता है, और हम संभवतः नहीं जान सकते हैं।

लेकिन मेरे लिए, जो हासिल होता है वह वास्तव में वही है जो आगुर भगवान से जो मांगता है उसके संबंध में कहता है, जो बताता है कि वह अपने जीवन के अंत के करीब नहीं है। मैं इसे एक क्षण में दिखाऊंगा। तो, लेकिन वह क्या कह रहा है? वह कह रहा है, कि न केवल वह थका हुआ, थका हुआ, तनावग्रस्त है, शायद हतोत्साहित है, बल्कि अपनी प्रार्थना में जो वह ईश्वर के पास लाता है, वह कहता रहता है, निश्चित रूप से, मैं इंसान होने के लिए बहुत मूर्ख हूं।

मुझमें मानवीय समझ नहीं है। और फिर श्लोक तीन, मैंने न तो ज्ञान सीखा है, न ही मुझे पवित्र या पवित्र लोगों का ज्ञान है। वह सब किस बारे में है? इसलिए, अगर हम एक वाक्य में संक्षेप में कहें, तो ये छंद, अगुर की ये स्वीकारोक्ति, जो वह करता है, वह मूल रूप से कह रहा है कि वह इतना मूर्ख है कि वह एक इंसान जितना बुद्धिमान भी नहीं है, और वह इस बात पर भी जोर देता है कि वह थोड़ा धार्मिक है ज्ञान।

हम एक क्षण में उस पर वापस आएं। अब, यह पढ़ना वाकई आश्चर्यजनक बात है, संग्रह के बिल्कुल अंत में जो ज्ञान और ज्ञान के बारे में है। अचानक, हमारे पास एक किताब के अंत के पास यह अजीब चरित्र सामने आता है जो कि ज्ञान और बुद्धि के अधिग्रहण के बारे में है।

और यह व्यक्ति, अब अपने प्रेरित कथन में, संकटग्रस्त होकर, कह रहा है, मैं इतना मूर्ख हूं कि अपनी बुद्धि के संबंध में एक इंसान गिना जा सकता हूं, और मुझे धार्मिक मामलों के बारे में कोई जानकारी नहीं है। ऐसा ही प्रतीत हो रहा है। अब, अगर हम इसे केवल अंकित मूल्य पर पढ़ते हैं और इसे शाब्दिक रूप से लेते हैं, और किसी भी तरह से इसकी व्याख्या करने की कोशिश नहीं करते हैं, तो हमें केवल यही धारणा मिलती है कि यह व्यक्ति स्पष्ट रूप से किसी प्रकार के अवसाद और आत्म-घृणा से पीड़ित है और वह वह अतिशयोक्ति कर रहा है।

हालाँकि, अगर हम कल्पना के साथ पढ़ना जारी रखते हैं, जैसा कि मैंने इस व्याख्यान श्रृंखला में सुझाव दिया है, तो इसकी अधिक संभावना है कि हमारे गुरु अपनी प्रार्थना में क्या कर रहे हैं, याद रखें कि वह भगवान को संबोधित करने के साथ शुरू करते हैं, और यह उनकी प्रार्थना का हिस्सा है, कि वह भगवान से अतिशयोक्तिपूर्ण ढंग से कह रहा है, हे भगवान, मैं अपनी बौद्धिक सीमाएं जानता हूं। मैं इसके बारे में बहुत गहराई से जानता हूं और इसीलिए मैं आपसे बात कर रहा हूं, क्योंकि मैं चाहता हूं कि आप मेरी मदद करें, जैसा कि हम एक पल में देखेंगे। तो, यदि आप चाहें, तो यह एक प्रकार की अतिरंजित विनम्रता है जिसे वह ईश्वर को प्रेरित करने के लिए यहां व्यक्त करता है कि वह उसकी वर्तमान अज्ञानता को पार करने में दयालुतापूर्वक मदद करे।

लगभग सुकरात के प्रसिद्ध वाक्यांशों के स्तर पर, जो कहा करते थे, मुझे पता है कि मैं कुछ भी नहीं जानता, और यह जानने के लिए, व्यक्ति को बहुत कुछ जानने की आवश्यकता है। यह सुकरात के बारे में मेरी आधुनिक व्याख्या की तरह है। तो मुझे लगता है कि इसी तरह की विनम्रता अगो यहाँ भी व्यक्त कर रही है।

उसके पास संसार और ईश्वर के बारे में गहरा ज्ञान है, जो उसे यह देखने में मदद करता है कि वह संसार और ईश्वर दोनों के बारे में कितना कम जानता है। और मेरा मानना है कि वह इसे अतिरंजित, आत्म-नकारात्मक तरीके से व्यक्त कर रहा है, ताकि भगवान को उस पर दया करने के लिए प्रेरित किया जा सके, और उसे एक नया रहस्योद्घाटन, या नई अंतर्दृष्टि प्रदान की जा सके जो उसे निपटने में मदद करेगी। मौजूदा संकट के साथ. इस खंड के बारे में एक आखिरी बात यह है कि, नए संशोधित मानक संस्करण के अनुसार, अर्गो कहता है, न ही मुझे पवित्र लोगों का ज्ञान है, जबकि एनआईवी में यह कहा गया है, न ही मुझे पवित्र लोगों का ज्ञान प्राप्त हुआ है।

और यदि हमने कई अन्य अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच, या स्पैनिश अनुवादों से परामर्श किया, तो हमें एक अनुवाद भी मिलेगा जिसमें लिखा होगा, मुझे पवित्र चीजों का कोई ज्ञान नहीं है। ऐसा क्यों? खैर, फिर से, हम कविता के साथ काम कर रहे हैं, और कविता अक्सर कम परिभाषित होती है, विशेषज्ञ भाषा का उपयोग करती है, और विशेष प्रकार के व्याकरणिक और वाक्यविन्यास रूपों का उपयोग करती है जो इसे बहुसंयोजक बनाती है, और इसमें तीन अलग-अलग प्रकार के अर्थ हो सकते हैं। तो यहाँ यह मामला है, और यही कारण है कि हम इसे विभिन्न बाइबल अनुवादों में परिलक्षित देखते हैं, पवित्र के ज्ञान की कमी की व्याख्या तीन अलग-अलग तरीकों से की जा सकती है।

पवित्र वस्तुएँ, पवित्र जैसे पवित्र अलौकिक प्राणी जैसे स्वर्गदूत, या अन्य देवता, और तीसरा, निश्चित रूप से, पवित्र अर्थात् इज़राइल का ईश्वर। अब, मुझे लगता है, यह, निश्चित रूप से, उन चीजों में से एक है जिन पर मैंने इस व्याख्यान श्रृंखला में जोर दिया है, कल्पनाशील रूप से पढ़ते हुए, शायद सबसे अच्छा संभव अनुवाद अनुवाद करना होगा, मुझे पवित्र चीजों, या शायद पवित्र मामलों के बारे में कोई जानकारी नहीं है, जो कि तीनों संभावित व्याख्याओं को शामिल करने के लिए पर्याप्त व्यापक है, ताकि अंग्रेजी अनुवाद बहुसंयोजकता को प्रतिबिंबित कर सके, तीन संभावित अर्थ जिन्हें एगवे यहां व्यक्त कर रहे हैं। मैं धार्मिक रूप से अज्ञानी हूँ.

वह यही कह रहा है. बेशक, इसका मतलब यह नहीं है कि वह कुछ नहीं जानता। इसका मतलब है कि वह जानता है कि स्वर्गीय स्थानों में ऐसे रहस्य उपलब्ध हैं जिनके बारे में वह अभी तक नहीं जानता है, लेकिन उसके बारे में और अधिक जानने के लिए उत्सुक है।

और फिर, जब मैं यहां एक व्याख्यात्मक, व्याख्यात्मक निर्णय लेने से बचने की कोशिश करता हूँ, तो मैं कठिन, व्याख्यात्मक कार्य से बाहर निकलने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ, बल्कि अपने कठिन, व्याख्यात्मक कार्य के अंत में, मैं कहना चाहता हूँ कि यह अस्पष्टता जानबूझकर है. अर्थ का अधिशेष बनाना और इन तीनों को एक साथ व्यक्त करना जानबूझकर की गई अस्पष्टता है। लेकिन फिर, यह एक कारण है कि अन्य, अधिकांश अन्य जो कल्पनाशील व्याख्या की मेरी लाइन का बिल्कुल पालन नहीं करते हैं, कहते हैं कि यह एक समस्या पाठ है, क्योंकि हम कैसे जान सकते हैं कि एगवे का क्या अर्थ है? खैर, मैं कहता हूँ, उसका मतलब यह सब है।

और इस प्रकार, मैं उसे हल करता हूँ जिसे अन्य लोगों ने बाइबिल के विद्वानों के शब्दजाल में, एक व्याख्यात्मक जड़, एक न सुलझने वाली समस्या के रूप में वर्णित किया है। खैर, हम यहाँ हैं। मैंने इसे हल कर लिया है.

और निस्संदेह, मैं जिस कारण से हंस रहा हूँ, वह यह है कि मैं एक साहसिक बयान दे रहा हूँ, एक तरह से बहुत सम्मानित, अत्यधिक सक्षम विद्वानों में से एक अल्पसंख्यक के रूप में बोल रहा हूँ जो मुझसे अलग सोचते हैं। इसलिए जब मैं यह कहता हूँ, और यद्यपि मुझे विश्वास है कि मैं सही हूँ, मैं यह भी करना चाहता हूँ, भले ही मैं इसे साहसपूर्वक करता हूँ, इसे विनम्रता की भावना के साथ करता हूँ, यह महसूस करते हुए कि, निश्चित रूप से, मैं गलत हो सकता हूँ। मैं तुम्हें निर्णय करने के लिए छोड़ता हूँ।

अब, तो यहाँ हम उसकी प्रार्थना में हैं। अगर कह रहा है, मैं भगवान को कुछ नहीं जानता, और मैं थक गया हूँ। मैं कैसे प्रबल हो सकता हूँ? मुझे प्रबल होने में मदद करें।

और फिर हम श्लोक 4 पर पहुँचते हैं, और श्लोक 4 पाँच या छह का एक क्रम खोलता है, मुझे लगता है कि यह पाँच प्रश्न हैं, सभी एक पंक्ति में, और वे एक मशीन गन की तरह आते हैं, जंगल की आग की तरह इस प्रवचन में, इस संवाद में आते हैं अगर और उसके भगवान के बीच। और एक प्रश्न जो तुरंत उठता है वह यह है कि प्रश्न कौन पूछ रहा है? चलो पता करते हैं। तो, श्लोक 3 एगवे के कहने के साथ समाप्त होता है, मुझे धार्मिक चीजों का ज्ञान नहीं है।

और फिर सवाल आते हैं. कौन स्वर्ग पर चढ़ा और नीचे आया? हवा को हाथ की खोखली में किसने इकट्ठा किया है? जल को वस्त्र में किसने लपेटा है? पृथ्वी के सभी छोरों को किसने स्थापित किया है? व्यक्ति का नाम क्या है? और उस व्यक्ति के बच्चे का नाम क्या है? क्या? हम फिर चकित हो जाते हैं और सोचते हैं, यहाँ क्या हो रहा है? पहली चीज़ जो हमें करने की ज़रूरत है, हम उन प्रश्नों की सामग्री के बारे में बात करेंगे और एक मिनट में वे वास्तव में क्या पूछ रहे हैं। लेकिन सबसे पहले, मुझे लगता है कि हमें यह सवाल उठाना होगा कि यहां वक्ता कौन है? निःसंदेह, सबसे स्वाभाविक समझ यह मान लेना होगा कि आप अभी भी वही बोल रहे हैं।

तो अगर ने अभी कहा है, मैं कुछ नहीं जानता, और अब वह और अधिक जानने के लिए प्रश्न पूछ रहा है। आइए बस देखें कि जिस प्रकार के प्रश्न यहां पूछे जा रहे हैं वे उस परिदृश्य में फिट होंगे या नहीं। कौन स्वर्ग पर चढ़ा और नीचे आया? हवा को हाथ की खोखली में किसने इकट्ठा किया है? जल को वस्त्र में किसने लपेटा है? पृथ्वी के सभी छोरों को किसने स्थापित किया है? व्यक्ति का नाम क्या है? और उस व्यक्ति के बच्चे का नाम क्या है? क्या यह वास्तव में उस प्रकार के प्रश्नों जैसा लगता है जो एगवे पूछेगा? मैं तर्क देना चाहता हूँ कि ऐसा नहीं है।

क्योंकि एक स्तर पर, प्रश्नों का उत्तर वास्तव में उसी तरीके से निहित है जिस तरह से प्रश्न पूछे जा रहे हैं। मैं आपको इनमें से प्रत्येक प्रश्न का एक या दो शब्दों में उत्तर देने जा रहा हूँ। और जैसे ही मैं यह कहूँगा, आप कहेंगे, हां, बिल्कुल।

क्योंकि प्रश्न में ही उत्तर निहित होता है। ये रहा। कौन स्वर्ग पर चढ़ा और नीचे आया? ईश्वर।

हवा को हाथ की खोखली में किसने इकट्ठा किया है? ईश्वर। जल को वस्त्र में किसने लपेटा है? ईश्वर। पृथ्वी के सभी छोरों को किसने स्थापित किया है? ईश्वर।

व्यक्ति का नाम क्या है? भगवान। आखिरी प्रश्न थोड़ा अधिक कठिन है। और उस व्यक्ति के बच्चे का नाम क्या है? ठीक है, यदि आप ईसाई हैं, तो आप यीशु मसीह कहेंगे।

यदि आप यहूदी हैं, तो आप कहेंगे, यह अजीब है। तो, मैं यहां जो तर्क दे रहा हूं वह यह है कि हमारे पास अलंकारिक प्रश्नों का एक क्रम है। और वे तेजी से आगे उगलते हैं।

बूम, बूम, बूम, बूम, बूम। और क्योंकि यह एक प्रार्थना है, एक प्रार्थना जो सामान्य रूप से होती है, भले ही यह हमेशा स्पष्ट न हो, एक आस्तिक और उनके भगवान के बीच एक संवाद है, यह संभव है कि यहां वक्ता आगुर नहीं है, बल्कि जवाब देने वाला भगवान है, विडंबना यह है कि जवाब देने वाला आगुर नहीं है। उसे उत्तर देने के साथ, लेकिन आगे प्रश्न पूछने के साथ। और जैसे ही हम प्रश्नों के इस त्वरित-फायर अनुक्रम पर विचार करते हैं, हमें वास्तव में बाइबिल साहित्य में त्वरित-फायर प्रश्नों के एक और अनुक्रम की याद आती है जहां भगवान एक अन्य बुद्धिमान व्यक्ति के साथ ठीक इसी तरह की बात कर रहे हैं जो संकट में है और मृत्यु के करीब है।

और वह अय्यूब है। अय्यूब की पुस्तक के अध्याय 38 से 42 में, हमारे पास वस्तुतः सैकड़ों प्रश्न हैं। मैं आपसे मजाक नहीं कर रहा, सैकड़ों प्रश्न हैं, जिनमें से अधिकांश बहुत समान हैं।

जब मैंने पृथ्वी वगैरह बनाई तब तुम कहाँ थे? और इसलिए, मैं यह कहने के लिए यहां मामला प्रस्तुत कर रहा हूं कि ये त्वरित-आग वाले प्रश्न जो यहां आ रहे हैं, वे आगुर को बताए गए भगवान की प्रतिक्रियाएं हैं, आपने अभी कबूल किया है कि आप धार्मिक चीजों के बारे में नहीं जानते हैं और मैं सहमत हूं। लेकिन मैं आपको यह बताना चाहता हूं कि मैं, भगवान, प्रभारी हूं। मुझे मालूम है कि मैं क्या कर रहा हूं।

और इसलिए, आपको जो करने की ज़रूरत है वह यह है कि आपको मुझ पर और केवल मुझ पर भरोसा करने की ज़रूरत है, न कि आपके पास जो भी ज्ञान या ज्ञान की कमी है उस पर। आप जिस संकट या चुनौती का सामना कर रहे हैं, उसमें इतने आत्म-केंद्रित और आत्म-केंद्रित न हों, बल्कि अपनी चिंताओं को मेरे पास लाएं। मुझे लगता है कि यह ईश्वर और आगुर के बीच अलंकारिक आदान-प्रदान है।

इसलिए अगर भगवान को अपने पक्ष में करने की कोशिश कर रहा है और कह रहा है, हे भगवान, इस स्थिति में मेरी मदद करो, और शायद यह मानकर चल रहा है कि स्थिति को बदल दो या मुझे वास्तव में यह समझने में मदद करो कि मैं इस स्थिति से कैसे निपट सकता हूं। और फिर भगवान इस पर प्रतिक्रिया दे रहे हैं और कह रहे हैं, आप इसे संभाल नहीं सकते। मुझे इसे संभालने दो।

आपको परिस्थिति पर नहीं, मुझ पर ध्यान देने की ज़रूरत है।' आपको अपने ज्ञान की कमी पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता नहीं है, आपको ध्यान केंद्रित नहीं करना चाहिए या यह सोचने की कोशिश नहीं करनी चाहिए कि स्थिति से बाहर निकलने का रास्ता यह है कि आप जिस विशेष संकट का सामना कर रहे हैं, उसके बारे में मैं आपको अधिक तथ्यात्मक ज्ञान प्रदान

करूं। बल्कि, भगवान आगुर से जो कह रहे हैं वह यह है कि मुझे पर भरोसा रखो और मैं इसे सुलझा लूंगा।

तो यह मेरी व्याख्या की तरह है। और फिर, अन्य व्याख्याएं भी हैं, लेकिन फिर भी, मुझे लगता है कि यह एक कल्पनाशील व्याख्या है जो वास्तव में हम यहां जो पाते हैं उसके अनुरूप है और व्यक्तिगत बयानों और बड़े परिप्रेक्ष्य के साथ-साथ समग्र रूप से समझ में आता है। जो चीज़ रहस्यमय बनी हुई है, निश्चित रूप से उस समय जब यह लिखा गया था, वह सवाल यह है कि क्या इन सबका उत्तर ईश्वर है, तो आखिरी सवाल, ईसाई दृष्टिकोण से, व्यक्ति का नाम क्या है, बहुत अच्छी तरह से फिट बैठता है।

प्राचीन इस्राएली दृष्टिकोण से, ऐसा नहीं है। तो, इस व्याख्या में, समस्याओं में से एक और एक चीज़ जो शायद मैं अभी तक पूरी तरह से समझ नहीं पाया हूँ, वह यह है कि यह प्रश्न क्या है? मैं अब इसे समझाने का प्रयास करूंगा, लेकिन मुझे एहसास हुआ है, जबकि मैं नीतिवचन की इस पुस्तक पर काम करना जारी रख रहा हूँ, इससे पहले कि मैं और अधिक आश्वस्त हो सकूँ कि यह व्याख्या सच है, मुझे थोड़ा और काम करने की जरूरत है। और यह है, कि अंतिम कथन, व्यक्ति के बच्चे का नाम क्या है, फिर से अन्य प्रश्नों की तरह है जो अलंकारिक प्रश्न हैं जो उत्तर का संकेत देते हैं, भगवान, भगवान, भगवान, भगवान, भगवान।

यहां, यह एक अलंकारिक प्रश्न भी है, लेकिन इसका तात्पर्य एक अलग तरह का उत्तर है। उत्तर के बजाय, नाम यीशु है, या नाम कोई अन्य छोटा भगवान है, या किसी देवता का पुत्र या कुछ और, बल्कि निहित उत्तर यह है, कोई नहीं जानता, कोई नहीं जान सकता, और इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। तो यह इस पर मेरा विचार है, लेकिन मुझे पता है कि मुझे इस पर थोड़ा और काम करने की जरूरत है।

सवालों की यह बौछार फिर एक बयान के साथ खत्म होती है, आप तो जानते ही होंगे। तो, अब यहाँ फिर से कोई व्यक्ति किसी और को संबोधित कर रहा है, और मैं यहाँ तर्क दे रहा हूँ कि यह भगवान आगुर को संबोधित कर रहा है। और यह निश्चित रूप से आप जानते हैं कि इन सभी प्रश्नों के अंत में परमेश्वर अय्यूब के साथ बिल्कुल वैसा ही करता है, ये सभी अलंकारिक प्रश्न हैं जिनका उत्तर देना अय्यूब के लिए असंभव है, और इन सबके अंत में, जब परमेश्वर ने अय्यूब से इन सभी प्रश्नों के बारे में पूछा है ब्रह्माण्ड की रचना कैसे हुई, या मगरमच्छों और दरियाई घोड़ों को कैसे वश में किया जाना चाहिए, और ये सभी आश्चर्यजनक प्रश्न, तब भगवान ने इसे एक तरह से सुलझाया और अय्यूब से कहा, निश्चित रूप से तुम्हें उत्तर पता है, चलो फिर आओ।

और निःसंदेह, यह सरासर व्यंग्य है। और मुझे लगता है कि बिल्कुल यही हो रहा है, अब यहां क्या हो रहा है। भगवान आगुर से कह रहे हैं, निश्चित रूप से तुम जानते हो, और निश्चित रूप से तुम नहीं जानते हो, और मैं यह जानता हूँ, और तुम वह जानते हो, और मैं जानता हूँ कि तुम वह जानते हो, और तुम जानते हो कि मैं वह जानता हूँ।

अब हम स्पष्ट हैं कि आप क्या करने जा रहे हैं। अर्थात्, मुझे लगता है, इस संवाद में यहाँ क्या अंतःक्रिया है? और हम यहां जो देख सकते हैं वह यह है कि यह गरीब आगुर और उसके सौम्य, प्रेमपूर्ण भगवान के बीच एक दोस्ताना, सौम्य परामर्श सत्र नहीं है।

यह दो वयस्कों के बीच एक गंभीर टकराव है। एक स्वर्ग में बड़ा हुआ और एक धरती पर बड़ा हुआ जो अपनी नाक धूल में रगड़ रहा है। अब इसके अंत में, अगुर जारी है।

और मैं अब अगले दो श्लोक पढ़ने जा रहा हूँ। क्योंकि मेरा मानना है कि वे अगुर की शुरुआती प्रतिक्रिया हैं जो उसने अभी-अभी सुना है, ईश्वर के शब्द जो उसने अभी-अभी सुने हैं। और यही वह कहता है, पद 5 में, परमेश्वर का प्रत्येक वचन सत्य साबित होता है।

वह उन लोगों के लिए ढाल है जो उसकी शरण में आते हैं। क्या आप देख सकते हैं कि अभी क्या हुआ? आगुर, घबराने, घबराने और ईश्वर से दूर भागने के बजाय, क्योंकि ईश्वर ने उसे इन सभी सवालों का सामना किया है, सीधे जवाब दे रहा है, या ऐसा प्रतीत होता है, वफादार ज्ञान के साथ। वह कहते हैं कि भगवान का हर वचन सत्य साबित होता है।

संदर्भ में, यदि मैं सही हूँ, और श्लोक 4 सभी प्रश्न हैं, ईश्वर की ओर से कहे गए शब्द, तो आगुर जो कह रहा है, मैं समझ गया हूँ। मैं समझ गया कि आप अभी मुझसे क्या कह रहे थे। आपके द्वारा मुझसे कहा गया हर शब्द सत्य साबित होता है।

अब हम इसे देख सकते हैं। और फिर वह बिल्कुल वैसा ही उत्तर देता है जैसा मैंने सुझाव दिया था। परमेश्वर चाहता है कि वह उत्तर दे।

याद रखें मैंने कहा था कि प्रश्नों का प्रभाव यह है कि अपनी समझ या उसकी कमी पर इतना ध्यान केंद्रित न करें, बल्कि मुझ पर ध्यान केंद्रित करें। मेरे द्वारा यह ठीक हो जायेगा। और देखो अगुर यहाँ क्या कहता है।

परमेश्वर का प्रत्येक वचन सत्य सिद्ध होता है। वह उन लोगों के लिए ढाल है जो उसकी शरण में आते हैं। बूम.

आगुर को मिल गया। उसे एहसास होता है कि जिस भी संकट का वह सामना कर रहा है उससे उबरने के लिए उसे अपने भगवान पर भरोसा करने की जरूरत है। और फिर आयत 6. उसकी बातों में झंझावा न करना, नहीं तो वह तुझे डाँटेगा और तू झूठा ठहरेगा।

और यहां हमारे पास अगुर द्वारा दूसरा प्रतिबिंब है जिसका संबंध दिव्य रहस्योद्घाटन से है। यह एक तरह से एक्लेसिएस्टेस की किताब के अंत के समान है जहां एक अंतिम संपादक जो किताब में एक्लेसिएस्टेस की शिक्षाओं पर टिप्पणी करता है, इन मामलों से परे कह रहा है, एक्लेसिएस्टेस के इन शब्दों पर ध्यान केंद्रित करें न कि अन्य चीजों पर क्योंकि निर्माण के कारण किताबों का कोई अंत नहीं है और बहुत अध्ययन करें कि शरीर कहां है। हमारे पास बाइबल में कई अन्य कथन भी हैं, उदाहरण के लिए प्रकाशितवाक्य में, जो कहता है कि ईश्वर के इस रहस्योद्घाटन में कुछ भी न हटाएं और न ही कुछ जोड़ें।

टोरा के रहस्योद्घाटन के अंत में व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में हमारे पास इसी प्रकार के कई कथन हैं। और इससे भी अधिक हमारे पास इज़राइल के बाहर प्राचीन निकट पूर्व के धार्मिक लेखों में समान प्रभाव वाले कई कथन हैं। इसलिए धार्मिक ग्रंथों के साथ अक्सर ऐसे कथन होते हैं जो इसमें कुछ भी नहीं जोड़ते हैं, इसमें से कुछ भी नहीं निकालते हैं, इसे वैसे ही लेते हैं जैसे यह है और इसे फिट नहीं बनाते हैं।

यहां प्रश्न तब उठता है जब हम इस पुस्तक के अंत में एक ऐसे व्यक्ति को पाते हैं जिसके पास स्पष्ट रूप से कुछ ज्ञान है जो ईश्वर के साथ बात कर रहा है, जो जो कहता है उससे प्रेरित होता है, यदि वह व्यक्ति अपनी अज्ञानता पर जोर दे रहा है, प्राप्त कर रहा है दैवीय रहस्योद्घाटन का अर्थ यह नहीं है कि मैं आपको अधिक जानकारी या अधिक ज्ञान या अधिक ज्ञान देता हूं, बल्कि मैं आपको आपके ज्ञान के बजाय मुझ पर, भगवान पर भरोसा करने में मदद करता हूं। और यह आदमी फिर कहता है कि भगवान के शब्द या शब्दों में कोई शब्द नहीं जोड़ा जाना चाहिए। तब मुझे ऐसा लगता है कि हमारे पास एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात है, मैं इसे कैसे कह सकता हूं, नीतिवचन की पुस्तक में अब तक ज्ञान के बारे में जो कुछ भी कहा गया है, उसका पूरक कथन।

अब तक अध्याय 1 से अध्याय 29 तक यह सब युवा पुरुषों के बारे में था और उस समय पुस्तक विशेष रूप से या अधिकतर पुरुषों को संबोधित थी। निःसंदेह, आधुनिक समय के लिए हम कहना चाहते हैं, युवक, युवती। यदि आप अधिक ज्ञान और बुद्धि प्राप्त करेंगे, तो आप अपने लिए अच्छा करेंगे।

लेकिन पुस्तक के अंत में, हमारे पास एक आदर्श चरित्र है जो बौद्धिक विनम्रता और विश्वास व्यक्त करते हुए कहता है कि मैं खुद पर भरोसा नहीं करना चाहता, बल्कि मैं भगवान के वचन पर भरोसा करता हूं। भगवान का हर शब्द। और वह इसलिए कहते हैं क्योंकि कुछ भी हटाया नहीं जाना चाहिए, कुछ भी नहीं जोड़ा जाना चाहिए, केवल भगवान का शब्द है।

और इसलिए, हमारे पास यहां नीतिवचन की पुस्तक के विकास का एक बाद का चरण हो सकता है जहां एक बहुत ही शक्तिशाली लेकिन रहस्यमय प्रतिबिंब जो शायद किसी अन्य अवसर के लिए अर्गो द्वारा निर्मित किया गया था, को प्रदान करने के लिए संग्रह के इस संग्रह में जोड़ा और शामिल किया गया है। ईश्वर के वचनों या वचनों के माध्यम से ईश्वर की ओर से दिव्य रहस्योद्घाटन के साथ संवर्धित ज्ञान के मूल्य पर और भी अधिक परिपक्व प्रतिबिंब। और इसलिए, यहां जो संभव है वह यह है कि हमारे पास पवित्रशास्त्र में भगवान के बाकी प्रकट शब्दों के साथ ज्ञान साहित्य का एक सूक्ष्म एकीकरण है। विशेष रूप से टोरा, मूसा की पांच पुस्तकें, सर्वोत्कृष्ट रूप से ईश्वर का वचन, लेकिन संभवतः भविष्यवक्ता भी, बाइबिल सिद्धांत की भविष्यसूचक पुस्तकें, जिनके बारे में सोचना एक आकर्षक बात है।

मैंने पहले इस बारे में बात नहीं की थी लेकिन उदाहरण के लिए अध्याय दो में टोरा के बारे में बहुत कुछ बताया गया है, वह शिक्षा जो एक युवा को हासिल करनी चाहिए। और यह वही तोरा शब्द है जिसका उपयोग प्राचीन इज़राइल में मूसा की पाँच पुस्तकों के लिए भी किया जाता है। अधिकांश लोगों ने लंबे समय से यह मान लिया है कि यहां उल्लिखित टोरा सिर्फ एक पर्यायवाची

है, यह मूसा की पांच पुस्तकों, टोरा का पर्यायवाची या पदनाम नहीं है, बल्कि यह पिता की शिक्षा का वर्णन करने का एक तरीका है।

अध्याय 30 के परिप्रेक्ष्य से और कई अन्य विचारों के आधार पर एक बहुत अच्छा और मजबूत मामला बनाया जा सकता है कि पुस्तक की शुरुआत के निकट अध्याय दो में और पुस्तक के अंत के निकट अध्याय 30 में, एक छिपा हुआ संदर्भ है, अप्रत्यक्ष रूप से इजराइल के अन्य धर्मग्रंथों के भी महत्वपूर्ण होने का हवाला दिया जा रहा है। याद रखें कि व्याख्यान श्रृंखला की शुरुआत में हमने कहा था कि यह आश्चर्यजनक है कि प्राचीन इजराइल के अन्य धार्मिक पहलू नीतिवचन, एक्लेसिएस्टेस और साथ ही अय्यूब की पुस्तक में कितनी कम भूमिका निभाते हैं। खैर, यहां अब हमारे पास थोड़ा सुधार हो सकता है जो बताता है कि शायद प्राचीन इजराइल आध्यात्मिकता के और भी पहलू हैं जिन्हें हम खो रहे थे जो वास्तव में अभी भी पृष्ठभूमि में हैं जो तथाकथित ज्ञान साहित्य को फिर से और अधिक करीब लाएंगे। प्राचीन इजराइल के सभी लेखों की समग्र समझ, जहां पुस्तक लगभग धर्मनिरपेक्ष नहीं है या अपने युग के अन्य धार्मिक लेखन और सोच से अलग नहीं है।

तो, हम वहां हैं। तो, यह प्रारंभिक प्रतिक्रिया है जहां अगुर अब उन प्रश्नों के माध्यम से जो कुछ उसने सीखा है उसके प्रभाव पर दार्शनिक और धार्मिक रूप से प्रतिबिंबित करता है जिसका वह उत्तर नहीं दे सकता है। और फिर हम छंद 7 से 9 में फिर से एक सीधी प्रार्थना पर आते हैं जहां अगुर अब फिर से सीधे भगवान को संबोधित करता है।

इसलिए, भगवान और अगुर के बीच इस संवाद की समग्र संरचना के भीतर एक प्रत्यक्ष, विशिष्ट प्रार्थना अनुक्रम के साथ प्रार्थनापूर्ण प्रतिबिंब अब भी जारी है। और श्लोक 7 से 9 में जो मैंने एक बार में पढ़ा, वह ईश्वर से दो बातें मांगता है। भगवान ने अभी उससे कहा है, तुम्हें मुझ पर भरोसा करना होगा।

उन्होंने अभी कहा, हाँ, ईश्वर उन लोगों के लिए ढाल है जो उनकी शरण में आते हैं और अब वह ऐसा कर रहे हैं। अब वह भगवान की शरण में हैं। वह ऐसा ही कर रहा है।

मेरा मानना है कि जिस तरह से वह ईश्वर की शरण लेकर ऐसा कर रहे हैं, वह वास्तव में अप्रत्यक्ष रूप से हमें यह समझा सकता है कि अगुर किस तरह के संकट का सामना कर रहा है। याद रखें पहले हम इस तथ्य के बारे में बात कर रहे थे, कि क्या वह अपने जीवन के अंत के करीब है और वह उपचार या आंतरिक शक्ति या कुछ और मांग रहा है? या क्या इसका संबंध इस बात से है कि क्या वह जीवन की पूर्णता में है या जीवन की शुरुआत में है और वह किसी विशिष्ट संकट का सामना कर रहा है? मुझे लगता है कि वह एक विशिष्ट संकट का सामना कर रहा है और अब मैं दिखाऊंगा कि मैं ऐसा क्यों सोचता हूँ। मैं आपको दो चीजें पेश करता हूँ।

अब मेरे मरने से पहले मुझे उनसे इन्कार मत करना। मेरे मरने से पहले, निश्चित रूप से, फिर से सुझाव देता है कि वह मृत्यु के करीब है। लेकिन मुझे लगता है, हालांकि ऐसा लगता है, फिर भी मुझे लगता है कि यह शुरुआती बयानों के समान एक अतिरंजित बयान है।

उन्होंने कहा, ओह, मैं कुछ नहीं जानता और वह वास्तव में काफी कुछ जानता था। यहाँ जब उसने कहा, ओह, मेरे मरने से पहले, वह अपनी प्रार्थना में ईश्वर के हाथ को मोड़ने के लिए अतिशयोक्ति कर रहा है। मुझे अपने ऊपर दया आ रही है, कुछ करो।

और तब वह सबसे पहली बात यही पूछता है, झूठ और झूठ को मुझ से दूर कर दो। और फिर दूसरी बात वह पूछता है, मुझे न तो गरीबी दो और न ही अमीरी। और फिर तीसरी बात वह पूछता है, तुम्हें पता है कि क्या हो रहा है, मुझे वह खाना खिलाओ जिसकी मुझे ज़रूरत है।

तो, वह कहता है, मैं आपसे दो चीज़ें पूछता हूँ और फिर वह तीन चीज़ें पूछता है। मुझे नहीं पता कि वह ऐसा क्यों करता है। उसे समझाने का एक तरीका यह होगा कि जब वह कहता है, तो पहली बात स्पष्ट रूप से अलग है, झूठ और झूठ को मुझसे दूर कर दें।

और फिर संभवतः दूसरी चीज़ एक ही चीज़ को दो बार व्यक्त करना या कुछ इसी तरह की है। अर्थात्, वे कहते हैं, मुझे न तो गरीबी दो और न ही अमीरी। मुझे केवल वही खिलाओ जिसकी मुझे आवश्यकता है, जो वास्तव में न तो गरीबी है और न ही अमीरी।

तो, शायद यह है, हालाँकि वह तीन अपीलें दे रहा है, दूसरी और तीसरी अपीलें वास्तव में एक और एक ही चीज़ के लिए पूछ रही हैं। तो, वह दो चीज़ें मांग रहा है, हालाँकि वह ऐसा तीन बार कर रहा है। अब, भले ही मैंने अभी कहा है कि ये दोनों चीज़ें दो अलग-अलग प्रकार की चीज़ें हैं, मुझे लगता है कि वे संबंधित हैं।

आगुर जो पहली चीज़ माँगता है वह है, मुझसे झूठ और झूठ को दूर करना। झूठ और झूठ बोलने वाले या तो अन्य लोग हो सकते हैं जो आगुर से झूठ बोल रहे हों और उसके साथ किसी तरह से झूठा व्यवहार कर रहे हों, विश्वासघाती रूप से, या कुछ और। या इसका मतलब यह हो सकता है कि आगुर ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है कि वह मेरी मदद करे कि मैं गलत और धोखे से काम न करूँ।

इसके बाद यह कहा जाता है, मुझे बस उतना ही दो जितना मुझे चाहिए, लेकिन मेरी ज़रूरत से कम नहीं और मेरी ज़रूरत से ज़्यादा नहीं। और फिर वह बताता है कि वह ऐसा क्यों मांग रहा है। और मुझे लगता है कि हमें श्लोक 9 में यह पढ़ने की ज़रूरत है कि वह ऐसा क्यों मांग रहा है ताकि यह समझ सके कि अधिकता या आवश्यकता के बजाय पर्याप्तता के लिए दूसरा अनुरोध झूठ और झूठ के बारे में पहले अनुरोध से कैसे संबंधित है।

क्योंकि वह कहता है, यदि मुझे यह न मिले, यदि मेरे पास बहुत कम या बहुत अधिक हो, तो वह कहता है, नहीं तो मैं तृप्त होकर तुम से इन्कार करूँगा और कहूँगा, प्रभु कौन है? ऐसा न हो कि मैं कंगाल हो जाऊँ, और चोरी करके अपने परमेश्वर का नाम अपवित्र करूँ। तो वह यहाँ क्या कहना चाह रहा है? वह जो कह रहा है वह यह है कि यदि उसके पास भौतिक संपत्ति की अधिकता है, तो वह आत्मनिर्भरता की स्थिति में वापस आ जाएगा और कहेगा, भगवान कौन है? वैसे, यह एक अलंकारिक प्रश्न भी है। उत्तर यह है कि भगवान कुछ भी नहीं है।

मुझे भगवान की जरूरत नहीं है। मैं इसे अपने आप कर सकता हूँ। निःसंदेह, यही वह मुद्दा है जिस पर हम पहले उनके चिंतन में विचार कर रहे थे।

इसलिए, वह ऐसी स्थिति नहीं चाहता जहां उसके पास इतनी अधिक भौतिक संपत्ति हो कि वह भगवान के साथ अपने रिश्ते की उपेक्षा करने के लिए प्रलोभित हो। और वह परमेश्वर पर भरोसा करना छोड़ देगा, परन्तु अपने ऊपर भरोसा रखेगा। और इसलिए, मेरा मानना है कि, धार्मिक दृष्टिकोण से, झूठ और झूठ में पड़ जाता है, अपने जीवन में ईश्वर के महत्व को नकारने के अर्थ में झूठ बोलता है।

दूसरी ओर, दूसरा चरम, यदि वह गरीब होता, तो उसके लिए प्रलोभन घमंड नहीं होता, बल्कि प्रलोभन इतना हताश होता कि वह कानून तोड़ने, अनैतिक कार्य करने और चोरी करने को उचित ठहराता। और इस प्रकार, वह कहता है, मेरे परमेश्वर के नाम को अपवित्र करना। वैसे, किसी भी तरह से आत्मनिर्भरता के तरीके हैं।

और, मेरा मानना है, गर्व। और इसलिए मुझे लगता है कि हमारे पास यहां क्या है, अगुरु वास्तव में उस पाठ का जवाब दे रहा है जो वह यहां सीख रहा है, कि वह, निश्चित रूप से, संपूर्ण प्रतिबिंब, निश्चित रूप से, एक काव्यात्मक रूप में, एक काव्यात्मक ध्यान में रिकॉर्ड करने का उसका तरीका है, जिस प्रक्रिया से वह गुजरा है, वह शायद केवल दो मिनट में एक प्रार्थना क्रम में नहीं, जैसा कि हम यहां पढ़ते हैं, बल्कि शायद कई दिनों, हफ्तों, महीनों या यहां तक कि वर्षों की अवधि के माध्यम से, जहां वह मुद्दों से जूझ रहा था। गौरव और आत्मनिर्भरता और जो वह सामना कर रहा था उससे निपटना। और मुझे लगता है, इसलिए, अब मैं इस प्रारंभिक खंड को यह कहकर समाप्त करता हूँ कि वह जिस संकट का सामना कर रहा था वह गर्व की क्षमता पर आधारित एक धार्मिक संकट था, शायद उसी प्रकार का गर्व जो आत्म-उन्मुख से उत्पन्न हो सकता था नीतिवचन की पुस्तक के प्रारंभिक अध्यायों को पढ़ना।

और उन्होंने इस प्रतिबिंब में महसूस किया है कि वास्तव में बुद्धिमान व्यक्ति के लिए सबसे अधिक आवश्यकता ईश्वर पर भरोसा करना है, न कि स्वयं पर, अपनी बुद्धि और ज्ञान पर। इससे हमें यहां पाठ में ही एक अच्छा ब्रेक मिलता है, और हम एक छोटा ब्रेक लेंगे। यह डॉ. नॉट हेम और नीतिवचन की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है।

यह सत्र संख्या 17, नीतिवचन अध्याय 30, श्लोक 1 से 9, अगोर का परिचय है।